(कहानी)

अम्मा

जोराम यालाम

दो ऊँचे पहाड़ों के बीच एक नदी बहा करती थी। सर्दियों में कोहरे से भरी रहती। इन दिनों यह कुछ सूख-सी जाती। लोग आराम से पैदल भी इसे पार कर सकते थे। बारिश के दिनों में यह कोहराम मचाया करती। घास-फूस तथा लकड़ियों से बने न जाने कितने घरों को यह लील गई। लेकिन यहाँ के लोग डरना नहीं जानते थे। रोज एक नया घर खड़ा हो जाता। इस शैतानी नदी को शांत करना है। प्रभु के भक्तों का मेला लगना है। प्रार्थनाएँ गूंजती रहनी चाहिए यहाँ। दिसंबर पवित्र महीना है। नए लोगों के लिए बब्तिस्मा लेने का अच्छा समय।

उस रोज नदी के दोनों तरफ लोगों का ताँता लगा हुआ था। कुछ लोग पानी के बीचों-बीच कांपते हुए खड़े थे। पास्टर के साथ वे लोगों को एक-एक कर नदी में डूबाते और बाहर लाते। और फिर पहले से अधिक ऊँची आवाज में प्रार्थना करने लगते। भीगे शरीर दांत के साथ किटकिटाने लगते। इसके बाद डूबकी लगवाने वाले लोग, "प्रभु प्रभूऊऊउ ...ऊऊ...ढ ध द्ध धन्य धन्य हूऊऊ हो हो प्रभु," कहते हुए तेजी से कपड़े बदलने भागने लगते। कुछ लोग टकटकी लगाये जो कुछ भी हो रहा है, उन्हें देख रहे हैं। पीठ पर बंधे कुछ बच्चे ईं, ऐ, ऊ कर करके रो रहे हैं। एक हाथ बच्चे पर दूसरा हाथ आसमान की तरफ उठाए शरीर को हिला हिला कर, जोर-जोर से कुछ माएँ भी यूनिफॉर्म पहने इन प्रेयर ग्रुप के औरतों के साथ प्रार्थना कर रही हैं, "हे प्रभु कृपा कर ! हे प्रभु दुःख दूर कर ! प्रभु तू सब जानता है। प्रभु इन नए अज्ञानी और पापी लोगों को स्वीकार कर। तेरा सु-समाचार संसार भर में फैले...।"

सुबह के पाँच बजे से लाईन में खड़ी हैं वह भी। घुटनों का दर्द और भी बढ़ता ही जा रहा है। उधर पास्टर बीच-बीच में चिल्लाता है, "प्रार्थना में लगे रहो ! प्रभु को एक क्षण के लिए भी नहीं भूलना। अपने पापों के लिए प्रभु से क्षमा मांगते रहो। आज सब कुछ धुल जाएगा। स्वर्ग जाना है, स्वर्ग जाना है, प्यारे परमेश्वर के पास जाना है। सबकी बीमारी दूर हो जाएगी।" लोग श्रद्धा से हाथ जोड़े, आँखें बंद कर प्रार्थना के स्वर में बहुत कुछ कहते हुए बुदबुदाने लगते हैं। वह भी अपनी दोनों हथेलियों को जोड़ लेती है। बगल में खड़ा दामाद कहता है, "अम्मा, आँखें बंद !" उसने जोर लगाकर आँखों को बंद किया। उसका मन कहता है, "नहीं, नहीं, बिना देखे कैसे प्रार्थना करूँ ! हमारे अनुष्ठान में तो 'न्यूब' भी अपनी आँखे बंद नहीं करते।" उसने अधखुली आँखों से देखा- सबको इधर-उधर, यहाँ और वहाँ। अरे, दामाद किधर गया? वह पीछे मुड़ती है। दामाद फुसफुसाते हुए कहता है, "अम्मा पीछे मत देखो। मैं यहीं हूँ। हमारी बारी आने ही वाली है।" उधर से पास्टर की तेज आँखें तीर की तरह भीड़ को चीरते हुए उसकी तरफ आती है। वह झेंपते हुए जोर से आँखें बंद कर लेती है।

"इस स्थान पर बहुत सारे बराम रहते हैं न , इसलिए नाम पड़ गया–बराम। आप इधर-उधर मत जाना। कब 'बराम' के पेट में चले जाओगे पता नहीं चलेगा।" कल रात दामाद ने ऐसा ही बताया था। उसके शरीर में सनसनी-सी दौड़ गई थी। पहली बार यहाँ आई थीं वह।

"तो ऐसी स्थान को ही बतिस्मा के लिए क्यों चुना होगा?" दामाद हँसता है।

"अरे बताओ न।"

दामाद फिर भी हँसता रहता है। क्या जाने क्यों यह नाम पड़ गया।

वह सोचती है, "प्रभु यीशु हैं तो डर क्या। लेकिन सांप तो सांप है। सावधान तो रहना होगा न।" उसने अधखुली आँखों को पूरा खोल दिया। पास्टर अब भी उसी को देख रहा था। उसने अपनी आँखें फिर बंद कर ली। थोड़ी देर बाद आँखें फिर अधखुली हो गई। पूरी तरह बंद ही नहीं होती। ओह, जाने कब प्रार्थना करना सीख पायेगी वह ! उसका मन फिर उदास हो गया।

"आइए, आइए, यहाँ, यहाँ, हाँ-हाँ यहाँ आइए अम्मा, बैठो बैठो।" पास्टर कहता है।

दामाद उसको कुर्सी पर बैठा देता है। बहुत नर्वस हो रही है वह। उसी समय सूरज रौशन हो गया। उसके शरीर को गर्माहट ने छू लिया। ओह, तो प्रकृति भी साथ है। वह सही कर रही है। बेचैनी कुछ कम-सी हुई।

"आप जानती हैं न आप क्यों आईं हैं यहाँ ?"

"हाँ पास्टर।"

"क्यों ?"

"घुटनों का दर्द दूर करवाना है। स्वर्ग जाना है। पाप धोना है।"

"कौन धोएगा आपका पाप ?"

"जीसू।"

"कैसे ?"

".....।" वह दामाद की तरफ देखती है। दामाद उसके कंधों पर हाथ रखते हुए न घबराने का इशारा करता है।

"जीसू कौन था ?"

"मोरियाम का पुत्र।"

"मोरियाम कौन ?"

"जीसू की माँ।"

"और कुछ जानती हो उसके बारे में ?"

"किसके बारे में ?"

"मोरियाम के बारे में।"

"मेरी देवरानी कहती थी मोरियाम जीसू की पत्नी थी।"

पास्टर का मुँह खुला का खुला रह जाता है। आस-पास खड़े प्रेयर टीम के कुछ लोग अपनी हँसी दबाने लगते हैं। पास्टर दामाद की तरफ देखता है।

"मैंने सब बता तो दिया था कि क्या-क्या बोलना है। शायद भूल गई है फिर से," दामाद ने झेंपते हुए कहा।

"अच्छा अम्मा बताओ। आपकी देवरानी ने ऐसा क्यों कहा होगा ?"

"क्या।"

"अरे, आपने कहा न कि उन्होंने आपको बताया था कि मोरियाम जीसू की पत्नी थीं ?"

"फोटो में जीसू और मोरियाम एक साथ खड़े हैं न। जीसू बुड्ढा और मोरियाम जवान दिखती हैं।"

"लेकिन आपको वे पति-पत्नी ही क्यों लगे ?"

"मुझे तो लगा था बाप-बेटी। लेकिन देवरानी कहती थी कि मोरियाम बूढ़े जीसू की जवान पत्नी थी। लेकिन दामाद ने कहा वे माँ-बेटे हैं।"

"तो किसकी बात सही लगती है ?"

"कौन-सी बात ?"

"ओफ्फो, मोरियाम, जीसू, पति-पत्नी, माँ-बेटा, आपकी देवारनी और दामाद ?"

"ओह.....।" क्या बोलती वह। परेशान-सी हो जाती है।

दामाद कहता है, " अम्मा मोरियाम जीसू की माँ थीं। जीसू की लंबी दाढ़ी है न-इसलिए वह मोरियाम से उम्र में बड़ा दिखता है।

"तो मोरियाम इतना जवान क्यों दिखती हैं ? बच्ची लगती है बिलकुल।"

"अम्मा छोड़ो उसको। आप तो परेशान हो गयीं। चलो कुछ और पूछते हैं," पास्टर ने मुस्कुराते हुए कहा।

"झूठ बोलती थी, इसलिए तो मेरे से पहले मर गई।" उसने धीरे से बुदबुदाते हुए बुरा-सा मुँह बनाया।

"कौन अम्मा ?" पास्टर आश्चर्य से पूछता है।

"मेरी देवरानी।"

"ओह! अच्छा-अच्छा। छोड़ो उसको। आप यह बताओ, बार-बार अपनी आँखें क्यों खोल रही थीं ?"

"कब ?"

"प्रार्थना के वक्त।"

"जागते में कैसे अपनी आँखें बंद रख सकती हूँ ? आँखें खोल कर प्रार्थना नहीं कर सकते क्या ?"

"आँखें खोल कर प्रार्थना नहीं की जाती अम्मा।"

"अच्छा ....मैं नहीं जानती न।"

"अच्छा बताओ, जीसू का जन्म कहाँ पर हुआ था ?"

"नॉर्थ लखीमपुर।" वह तपाक से बोलती है।

"नॉर्थ लखीमपुर नहीं अम्मा, बेतलेहम," पास्टर ने जैसे-तैसे अपनी हँसी रोकते हुए कहा। प्रेयर ग्रुप के लोगों ने भी बहुत मेहनत से अपने को हँसने से रोका। अम्मा ने सकपकाते हुए दामाद की तरफ देखा। दामाद परेशान-सा हो गया।

"उनकी मृत्यु कहाँ हुई थी ?"

"किसकी ?"

"जीसू की।"

यह तो बहुत ही आसान सवाल था। कौन नहीं जानेगा इसे भला! तो उसने ज्ञानियों से अंदाज में कहा, "दापोरिजो में।"

पास्टर जोर-जोर से हँसते-हँसते हुए खड़ा हो गया। प्रेयर ग्रुप के लोग तितर-बितर हो गए। दामाद ने सिर पकड़ लिया। वहाँ नदी में खड़े प्रेयर ग्रुप के कुछ लोग बर्फ बनते जा रहे थे। सब समझ नहीं पा रहे थे कि वे इतना हँस क्यों रहे हैं ? भई, गंभीर और पवित्र समय है। यह लोग अचानक नासमझ और चंचल क्यों हो गए? सबकी आँखें हँसने वाले लोगों पर टिक गईं। छोटे-छोटे बच्चे दौड़-दौड़ कर इन लोगों के पास आने लगे। एक आदमी

ने माइक पर बोला, "अपनी-अपनी जगह पर कृपया बने रहें। यहाँ कोई खेल नहीं चल रहा है।" पास्टर अपनी जगह पर बैठ गए। प्रेयर ग्रुप के लोग गोल घेरा बनाकर फिर से उसी जगह पर खड़े हो गए। चंचल बच्चे शर्माते हुए वापिस अपनी-अपनी माँओं के पास चले गए। इधर अम्मा का शरीर शर्म और झिझक से सिकुड़ा जा रहा था।

"अम्मा, जीसू की मृत्यु यरुशलम में हुई थी। दापो मतलब क्रोस क्रोस," पास्टर ने क्रोस शब्द पर जोर देते हुए कहा।

"अच्छा।"

"क्रोस पर पापियों द्वारा वह लटकाया गया था। दापोरिजो तो अरुणाचल प्रदेश में हैं न। जीसू कैसे इधर आएगा ?"

"क्रूस कात ?"

"हाँ अम्मा। वह क्रोस भारी-भरकम काठ का बना था।"

"...।" वह रुआंसी हो जाती है। पास्टर और दामाद उसको संभालते हैं।

"अच्छा अम्मा, आपके दामाद ने बताया कि आपके पति अब नहीं रहे। वह तो अपने पूर्वजों के पास चले गए होंगे न। आप इसाई बन जाती हैं तो आपकी आत्मा तो स्वर्ग चली जाएगी। आप फिर भी तैयार हैं ?"

"किस बात के लिए तैयार ?"

"आप अपने पति की आत्मा से मरने के बाद मिल नहीं पायेंगी।"

"...।" चेहरे की झुरियों में चिंता, भय और बेबसी का मिश्रित रंग साफ़ दिखने लगा। वह हतप्रभ है।

"बोलो न अम्मा। डरो मत। पिता परमेश्वर आपके साथ हैं।" पास्टर दया से भर गया। उसकी आवाज बहुत नरम थी।

"मेरी माँ और मेरे पिताजी की आत्मा से भी नहीं मिल पाऊँगी ?"

"नहीं।"

"दादा, दादी, नाना-नानी ?"

"नहीं, बिलकुल नहीं।"

"यह तुमने पहले क्यों नहीं बताया मुझे ?" उसने दामाद की तरफ देखते हुए शिकायत और गुस्से से भरे लहजे में कहा।

"अम्मा, स्वर्ग में आराम ही आराम है। नाचते-गाते रहो बस। पूर्वजों की दुनिया इससे उलटी है। भूतों के पास क्यों जाना ?"

"लेकिन मुझे जाना है।" उसकी आँखों में बेबसी का भाव था।

"अम्मा जीते जी अकेली रहना है क्या ?" दामाद ने समझाने के अंदाज में कहा।

"...।"

"तो फिर आप इसाई क्यों बनना चाहतीं थीं ?" पास्टर ने उसके सिर पर प्यार से हाथ फैरते हुए कहा।

"गाँव वाले सभी ईसाई बन गए हैं न। मैं अकेली कैसे रह जाती ! अनुष्ठानिक भी गिरिजा भाग गए।" वह रोने लगती हैं।

"बतिस्मा के लिए तैयार हैं आप ?"

"...।" उसका दिमाग सुन्न पड़ गया।

पति कहता था मरकर भी अलग नहीं होंगे। पूर्वजों के स्थान पर भी अपना परिवार बनायेंगे। खूब-खेती-बारी करेंगे। लंबा-सा घर होगा। पंक्तियों में कई चूल्हे जल रहे होंगे। उन्हीं में एक चूल्हा अपना होगा।

"अम्मा ! हाँ बोलो।" दामाद ने उसके शरीर को झकझोरते हुए कहा।

उसने सकपकाते हुए कहा, "हाँ, हाँ।"

देरी न करते हुए तुरंत नदी में उसके शरीर को डुबकी लगवाई गई। पास्टर ने अंत में उसको नया नाम दिया, "मोरियाम।"

उसने क्षीण आवाज में पुकारा , "दो...न्यी....! मै आती हूँ !" दोन्यी उसके पति का नाम था।

न्यूब = अनुष्ठानिक/पुजारी

बराम = अजगर

दापोरिजो = एक स्थान का नाम है। संक्षिप्त में लोग इसे 'दापो' कहते हैं।

लखीमपुर - असम-अरुणाचल का एक सीमावर्ती इलाका - जो असम के अंतर्गत आता है।

*(**लेखकीय परिचय :** अरुणाचल प्रदेश की सुपरिचित कहानीकार और चर्चित लेखिका डॉ. जोराम यालाम राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रोफेसर हैं। आपकी बहुचर्चित प्रकाशित पुस्तकें हैं- 'साक्षी है पीपल', 'जंगली फूल', 'गाय गेका की औरतें', 'तानी कथाएँ : अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी-जीवन की विश्व-दृष्टि'।*

मोबा: 9436044288, ई-मेल : joram.yalam@rgu.ac.in)